॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 18 अंक : 23 10 दिसम्बर 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे-मोती, फिर सोना उगाने वाला किसान क्यों बदहाल ?

किसानों के सात असली दुश्मन

-: गोविन्दराम आर्य :-

किसान भाइयों! सरकार जागे या न जागे,
तुम स्वयं ही जाग जाओ,
अपना तथा अपने देश का भाग्य बनाओ।

किसान खुशहाल तो राष्ट्र खुशहाल- भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि को भारत देश की रीढ़ की हड्डी कहा गया है अत: किसान सुखी तो राष्ट्र सुखी, किसान कर्जदार तो राष्ट्र कर्जदार, किसान भिखारी तो राष्ट्र भिखारी, किसान बीमार तो राष्ट्र बीमार। किसान सुविचार तो राष्ट्र सुविचार, किसान का गोवर्धन तो राष्ट्र का गोवर्धन, किसान का विकास तो राष्ट्र का विकास।

लेकिन यह सब कुछ कैसे- मतलब यह है कि किसान और किसानी मजदूर छोटे-छोटे बाजारों को चलाते हैं तो उनमें रौकन आती है। इन तहसील स्तर के छोटे-छोटे बाजारों से जिला स्तर के सभी बाजार चलते हैं, उनमें रौनक आती है। देखा गया है कि जहां की मंडियों में चहल-पहल अधिक होती है, उस क्षेत्र के बाजारों में भी अध्का चहल-पहन होती है। बड़े-बड़े बाजार जब चलते हैं तो यह बड़े-बड़े बाजार बड़ी-बड़ी कम्पनियों को चलाते हैं। यह बड़ी-बड़ी कम्पनियां ही देश को उद्योग के क्षेत्र में आगे बढ़ाती हैं। देश के कारखाने चलते हैं। देश के उद्योग चलते हैं तो वे राष्ट्र को मजबूती प्रदान करते हैं। अर्थात् राष्ट्र मजबूत होता है, राष्ट्र आगे बढ़ता है। वास्तविकता यह है कि देश का किसान कर्जदार तो देश भी कर्जदार होगा। जिस देश के किसान भिखारी है तो वह देश भी भिखारी ही रहेगा, अन्य देशों सेयाविश्व बैंक से भीख मांगेगा। यहां तक कि वह देश कर्ज चुकाने हेतु भी कर्ज लेगा। इने-गिने लोगों के सम्पन्न या खुशहाल होने से राष्ट्र सम्पन्न वा खुशहाल नहीं हो सकता। बिना अर्थ के कोई भी राष्ट्र अपनी प्रगति नहीं कर सकता, शक्तिशाली नही हो सकता। किसान शक्तिशाली होगा तो राष्ट्र शक्तिशाली होगा।

वैसे भी वर्तमान में अन्य क्षेत्रों को छोड़कर एकमात्र कृषि क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जो भ्रष्टाचार आदि से मुक्त होकर कृषक को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है यह वर्ग मेहनती तथा ईमानदार होता है कुछ अपवाद छोड़कर व्यापारी, राजनेता, अधिकारी, धार्मिक चोला ओढ़े पाखण्डी, ठगबाज इसे लूट लेते हैं किंतु यह सहनशील होता है प्राकृतिक एवं मानव कृत विपत्तियाँ धैर्यपूर्वक सहन कर जाता है।

असली किसानों की पहचान व परिभाषा क्या है ?- वास्तविक किसान कौन व देश में असली किसानों की पहचान क्या? ताकि किसानप के नाम से उसका पंजीयन किया जा सके। किसी भी व्यक्ति के नाम से केवल जमीन होना भर ही किसान की परिभाषा में नहीं आता यह किसान की पहचान नहीं है। जमीन तो बहुत बड़े-बड़े मिल मालिकों, बड़े-बड़े व्यापारी, बिल्डरों आदि के नाम से भी है। लेकिन वे असली किसान नहीं हो सकते, उन्होंने तो प्रोपर्टी के रूप में जमीन रख छोड़ी है। केवल जमीन नाम से होने से किसान नहीं हो सकता, इसके मापदंड व पैमाना होना चाहिए जिसका नियम कानून संसद में सोच विचार कर बनाए जाएं। खेती पर ही जिसका जीवन निर्वाह हो व जमीन नाम से होवे यही असली किसान की पहचान है। व जिसके नाम से जमीन नहीं है, लेकिन दूसरों की जमीन पर खेती व मजदूरी कर जीवन निर्वाह करता है। वह किसानी मजदूर है।

असली किसान वही जिसको देश से प्रेम है, राष्ट्र भक्त है, राष्ट्र की आन-बान-शान के लिए अपना जीवन भी दे सकता है। जो भारत माता को भारत माता कहे, वन्दे मातरम् बोले, अपने राष्ट्र की संस्कृति को अपनाये, अपने राष्ट्र से बढ़कर और कोई भी तीर्थ ना माने, अपने राष्ट्र में राम राज्य की कल्पना करें और उस कल्पना को साकार करने में अपना पूरा जीवन अर्पित कर देवें। तो वह भारत के असली किसान की परिभाषा में आता है। ऐसे किसानों का, किसानी मजदूरों का रजिस्ट्रेशन किसान के नाम से किया जाये ताकि देश में असली किसान की व किसानी मजदूरों की सही संख्या ज्ञात हो सके?

किसान राष्ट्र का भामाशाह- भगवान ने किसान को इतना मालामाल बनाया जितना शायद किसी और को नहीं बनाया। मजदूर से लगाकर मिल मालिकों को इतना नहीं दिया जितना किसान को दिया है। एक दाने को हजार गुना से भी अधिक दिया है। एक राजगिरा का बीज बो दो अनगिनत हो जाएगा। ज्वार, मक्की, गेहूं, चना, तुवर के एक-एक दाने से हजारों गुना होते हैं। इस दुनिया में किसी को मिला है तो वह मिला है किसान को, इसलिए तो जनता किसान को अन्नदाता कहती है। क्योंकि किसान ही किड़ी, कून्जर से लेकर मजदूर व मिल मालिकों तक का पेट भरता है।

भारत का किसान भारत का भामाशाह- किनतु दु:ख इस बात का है कि सरकार खुद ही नहीं जानती है कि किसान राष्ट्र का भामाशाह है। **भारत की सरकारें अपने इस भामाशाह को आज तक पहचान नहीं पाई और यह भामाशाह भी अपने आप को समझ नहीं पाया कि मैं राष्ट्र का भामाशाह हूँ।** नासमझी के कारण सरकार किसानों को वोट के खातिर कर्ज माफ कर देती है। फसल का नुकसान होने पर एक लाख के नुकसान पर हजार पाँच सौ रुपए नुकसान की पूर्ति करने हेतु दे देती है। कभी-कभी खेत में नई तलई, तालाब बनाने हेतु सब्सिडी देकर किसान को खुश करने का प्रयास करती है।

किसान भी गलत दिशा में भटक कर किसान आंदोलन कर गलत राजनीति का शिकार हो बैठता है। किसान आंदोलन से राष्ट्र को नुकसान तो होता ही होता है, स्वयं अपना भी नुकसान कर बैठता है। नासमझी के कारण सरकार से भीख मांगता है और सरकार ऊंट के मुंह में जीरा जैसा करके उसके आँसु पोछने की नौटंकी करती है।

यह इस तरह से होता है जैसे एक व्यक्ति दिन में लालटेन जलाकर सड़क पर निकलता है और कोई उससे पूछे कि दिन में लालटेन लगाकर कहा जा रहे हो, वह

कहता है कि मैं सूर्य को प्रकाश दिखा रहा हूं तो आप कहोगे कि यह कैसा मूर्ख है। जो संसार को प्रकाश दे रहा है उसे यह इस लालटेन से प्रकाश दिखा रहा है। यही बात किसान की है जो अन्नदाता है, किड़ी-कून्जर से लेकर मजदूर व मिल मालिकों तक का पेट भरता है सौ-पचास रुपए की सब्सिडी देकर दूसर्य को प्रकाश दिखाने जैसा कार्य सरकार नासमझी के कारण करती है, अगर सरकार को किसान के प्रति वास्तविकता में हमदर्दी हो तो किसान व किसानी मजदूर को बर्बाद कर देने वाले किसान के सात असली दुश्मन हैं जो किसान है जो किसान की मेहनत की कमाई को चट कर जाते हैं। उन्हें सरकार समाप्त कर देवे तो किसान सम्पन्न व खुशहाल हो जायेगा। लेकिन सरकार ऐसा करती नहीं है।

क्योंकि जहां दलिय सरकार होगी वहां सरकार के लिए प्रथम दल होता है (दल का अर्थ पार्टी) दूसरे नम्बर पर राष्ट्र होता है। सरकार सोच समझ कर ऐसे निर्णय लेती है जिससे अपनी पार्टी का जनाधार बढ़े, अपनी पार्टी का नुकसान नहीं होना चाहिए। उस निर्णय से दलिय सरकार को लाभ होता हो तो ठीक, नहीं होता हो तो ठीक किन्तु पार्टी का नुकसान नहीं होना चाहिए। दलिय सरकार में यह दोष्ा होता है। जहां राष्ट्रीय सरकार होती है। वहां राष्ट्र को सर्वप्रथम रखकर निर्णय लेती है। हमारे देश में राष्ट्रीय सरकार नहीं है। दलिय सरकार है यानी पार्टी की सरकार अगर दलिय सरकार ने हिम्मत कर किसान को बर्बाद कर देने वाले किसान के सात असली दुश्मनों को समाप्त कर दिया तो यह निश्चित समझिए किसान सम्पन्न व खुशहाल हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश देश पर कोई संकट आता है तो किसान सरकार से बिना शर्त, कुछ लिए बगैर सरकार का खजाना भर देंगे। तभी सार्थक होगा जय जवान, जय किसान तब होगी भारत माता की जय, तभी होगा भारत महान व तभी बनेगा भारत विश्व गुरु।

किसान को बर्बाद कर देने वाले किसान के सात असली दुश्मन- इन दुश्मनों को समाप्त किये बिना किसान सम्पन्न व खुशहाल नहीं हो सकता है। सरकार, किसानों की आय कितनी ही गुना बढ़ा देवे व लाखों करोड़ों रुपए की सहायता भी कर देवें तब भी किसान सम्पन्न व खुशहाल नहीं हो सकता किसान कर्ज में पैदा होगा व कर्ज में मरेगा, जैसा है वैसा ही रहेगा अपितु वर्तमान स्थिति में तो उसका सवनाश ही है। क्योंकि किसान की जो मेहनत की कमाई व सरकार द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सहायता निरर्थक रूप से जिन-जिन कारणों से चली जाती है। वही सात असली दुश्मन किसान को कर्जदार और कंगाल बनाये रखते हैं।

सरकार किसान की माली हालत ठीक करना चाहती है तो किसान के कर्ज माफ करने की आवश्यकता नहीं, किसान को सब्सिडी देने की आवश्यकता नहीं है। केवल किसान के सात असली दुश्मनों को समाप्त कर देवें तो किसान सुखी सम्पन्न व मालामाल हो जायेगा। किसान के सात असली दुश्मनों को समाप्त किये बिना सरकार किसानों की अच्छी हालत पैदा नहीं कर सकती है चाहे कितन भी सहायता देवे, चाहे कितना भी प्रयास करे।

किसान के निम्नाकिंत सात असली दुश्मन है। किसान की अच्छी हालत बनाने हेतु सरकार को किसान के इन सातों दुश्मनों को समाप्त करना ही होगा। इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है।

1. रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाई एवं हायब्रीड बीज- रासायनिक खाद व कीटनाशक दवाई एवं हायब्रीड बीज ने किसानों को बर्बाद कर दिया है जब से महंगा रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाई खेत में डाल रहे हैं। जमीन खराब होती जा रही हैं। अधिक उत्पादन लेने के चक्कर में खेत में प्रतिवर्ष रासायनिक खाद व कीटनाशक दवाई की मात्रा अधिक व हेवी डोज पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ाना पड़ता है फिर भी इल्ली व बीमारियों का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। इस तरह जमीन जहरीली होकर फसल व भूसा ही जहरीला हो जाता है। इस तरह फल, फ्रूट, सब्जी, अनाज सभी जहरीले हो गये जहरीला भूसा गाय के खाने से गाय का दूध भी जहरीला हो गया कृषि फसल के मित्र कीट भी मर जाते हैं। इतना ही नहीं कृषि वैज्ञानिकों ने अमेरिका के जर्सी नामक सूअर जिसे भारत में जर्सी गाय व जर्सी बैल बिना खन्डाले के जो खेती के लिए काम नहीं आते देशी गाय व बैल की नस्ल बिगाड़ दी, जर्सी गाय का दूध, घी, मक्खन भी बीमारियों को जन्म देता है। जहरीली सब्जी, फल, अन्न, दूध खाकर किसान व किसानी मजदूर रोगी होकर अपनी कमाई अनेक बीमारियों को ठीक करने में अस्पताल में अधिकांश रुपये खर्च कर देता है प्रत्येक परिवार में ये खतरनाक जान लेवा रोग हो रहे हैं।

किसान अपनी कमाई का अधिकांश रुपया रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाई, हाईब्रीड बीज में खर्च कर देता है। खाद, दवाई, बीज, दूध द्वारा यही जहर पेट में जाकर बीमारी लाता है। अधिकांश रुपए अस्पताल में खर्च हो जाते हैं फिर भी बीमार ठीक नहीं हो पाता है एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल तक बीमार को लेकर घूमते रहते हैं फिर भी वह बीमार नहीं बचता है। जमीन भी इन खाद, दवाई से कड़क होकर बिना ट्रेक्टर के जुताई नहीं कर सकते हैं। लोकी, तुरई, गिलकी आदि में इंजेक्शन देकर स्वादहीन होकर लम्बी कर देते हैं। सरकार जर्सी गाय की जगह देशी गाय व रासायनिक खाद कीटनाशक दवाई, हाईब्रीड बीज मुक्त जीरो बजट प्राकृतिक खेती सुभाषा पारलेकर की थ्योरी की खेती व देशी बीज-खाद को अपनाये।

दुधारु गाय से दूध, घी, मक्खन तो मिलेगा ही लेकिन बूढ़ी गाय के गोबर, गोमूत्र अधिक गुणकारी होते हैं जो दवाई बनाने के काम में आते हैं। एक बूढ़ी गाय के 5 लीटर गौमूत्र से ढाई लीटर अर्क से कम से कम 400 रुपये लीटर से 1000 रुपये का प्रतिदिन की आय होती है। 5 लीटर गो मूत्र में 250 ग्राम धनवटी निकलती है जो 600 रुपये की 100 ग्राम से 1500 रुपये की आय होती है। 5 लीटर गोमूत्र से 1 लीटर अमोनिया 37 रुपए का होता है। इस तरह 5 लीटर गौ मूत्र से एक दिन में 2537 रुपए होती है। बूढ़ी गाय से दूध व गोबर की कीमत अलग से एक गाय पालने में होती है।

2. पुलिस थाना कोर्ट कचहरी- किसान को खेत में जाने के लिए रास्ते के झगड़े, पानी निकाली का एक दूसरे के खेत में निकालने का झगड़ा, सीमांकन का झगड़ा इसमें किसान का पैसा, वकील, पुलिस, कोर्ट कचहरी में जीवन भर खर्च ही होता है। पीढ़ी दर पीढ़ी ये झगड़े चला करते हैं। जमीन की आपसी बंटवारे में भी पटवारी, तहसीलदार को मुंह मांगा पैसा देना पड़ता है नामांतरण में भी ऐसा ही होता है। होना तो यह चाहिए कि परिवार के जिस मुखिया के नाम से जमीन, मकान है। मुखिया अपनी सहमति से सब भाइयों में बराबर का बंटवारा कर 50 या 100 रु. के स्टाम्प पर आपसी सहमति के बंटवारे पर अपने दस्तखत करा लेने व जमीन हो या मकान पर नामांतरण कर देवे तो किसान का रजिस्ट्री आदि का या पटवारी, तहसीलदार को रिश्वत के रूप में पैसा देना बच जावेगा।

3. किसान व किसानी मजदूर के बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा- किसान के साथ किसानी मजदूर का भी रजिस्ट्रेशन होना चाहिए पढ़ाई इतनी महंगी हो गई है कि किसान का अधिकांश पैसा बच्चों की पढ़ाई में ही खर्च हो जाता है। प्राइवेट स्कूलों की फीस, वाहन, होस्टलों में ठहरने का, पुस्तकें, कपड़े आदि खर्च में हो ही जाता है। सरकार किसान के बच्चों को पहली से लगाकर एम.ए., एम.एससी., पी.एच.डी. जब तक पढ़ें सम्पूर्ण पढ़ाई, भोजन, निवास, पुस्तकें, कपड़े आदि का नि:शुल्क प्रबन्ध करे।

4. अस्पताल में बीमारियों का खर्च- अस्पताल में डाक्टर, दवाई, फीस, जांच फीस, भोजन खर्च आदि किसान व किसानी मजदूरों को पूरे परिवार की बीमारियों के लिए अधिकांश पैसा खर्च हो जाता है। वर्तमान में जहरीले कीटनाश्का दवाई, रासायनिक खाद, बीड़ी-सिगरेट, शराब, मांस आदि के सेवन से यह जहर पेट में जाकर बीमारियों का जन्म देता है। सरकार प्रत्येक किसान व किसानी मजदूरों के परिवारों को बीमार या एक्सीडेंट होने की सूचना पर घर से लाना ले जाना, भोजन से लगाकर समस्त इलाज का खर्च सरकार वहन करे। ऐसा सरकार द्वारा नि:शुल्क करने पर ही किसान की की मेहनत की कमाई बच जायेगी। तभी किसान खेती से उत्पादन इतना अधिक करेगा कि सरकार को मजबूरन दूध, दही, घी, फल-फ्रूट, सब्जी, अनाज आदि निर्यात करना पड़ेगा।

5. खर्चीले रीति रिवाज- भारत में गर्भाधान से मरण पर्यन्त मनुष्य जीवन के 16 संस्कार जो सादगीपूर्ण सम्पन्न होते थे किन्तु शिक्षा में वेदादि शास्त्रों का अध्ययन छूटने से मानव जीवन निर्माण के आधार इन संस्कारों के स्थान पर मनुष्य ने अपनी आवश्यकता अनुसार रीति रिवाज प्रचलित कर लिए। रीति रिवाज मनुष्यों ने देश, काल, परिस्थिति के अनुसार अपने हित के लिए मानव की सुख-सुविधा अनुसार बनाये थे। वर्तमान में उनमें अपभ्रंशता आ गई। किसान व किसानी मजदूर नुक्ता, मौसम, विवाह, गोरनी, सगाई जन्म सेमरण तक के रस्मों को अपनी झूठी मान प्रतिष्ठा में अपनी हैसियत से अधिक खर्च कर देता है यहां तक कि कर्ज लेकर इन रस्मों को पूरा करता है जिससे कर्ज घटने की बजाय बढ़ता ही जाता है। सरकार ने सामूहिक विवाह शुरू किया वैसे ही अन्य रीति रिवाजों को भी शुरु करे सभी रीति रिवाजों के संस्कारों की समिति किसानों की बनाये केवल जनपद का सी.ई.ओ., ब्लाक स्तर का एक अधिकारी शासन की तरफ से समिति में रहे इन संस्कारों का थोड़ा सा रजिस्ट्रेशन शुल्क अवश्य रखा जाये व शुद्ध असली किसानों की समिति बनाकर सभी रीति रिवाज कम खर्च में वैदिक विद्वानों के द्वारा सामूहिक में सम्पन्न कराये जाये। 16 संस्कार करने हेतु किसानों की जो समिति बनाई जावें उसमें जो संस्कार करायेगें उन्हें सरकारी लाभ मिलेगा ऐसा कानून बना दिया जाए तो सभी किसान समस्त संस्कारों को सामुहिक में ही करने लगेंगे जिससे किसानों का पैसा बचेगा। आर्य समाज के विद्वानों द्वारा समस्त रीति रिवाजों के संस्कार सम्पन्न कराए जाए। क्योंकि आर्य समाज के वैदिक विद्वानों में ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर नहीं होता है।

6. अंध विश्वास एवं पाखंड- वैदिक साहित्य स्वाध्याय नहीं होने से किसान व किसानी मजदूरों की अधिकांश कमाई अंध विश्वास एवं पोप पाखंडों में चली जाती है। भेरू महाराज या शीतला माता की मान हो, श्राद्ध हो या तर्पण हो, जन्म कुण्डली, हाथ दिखाना, ताबीज, गण्डा, भूत, प्रेत, डाकन, चुड़ैल, परी, जिन्न लगना, शनि-साढ़े साती अपने-अपने ऊपर ग्रह चढ़ना, टोटके, जादू, नजर लग जाना, बाहरी बाधा, लड़का या लड़की का मूल में पैदा होना, मंगली होना, तुलसी का, गंगा का विवाह कराना आदि अनेक अंध विश्वास में पड़कर अपने धन को लुटाते रहते हैं और बर्बाद हो जाते

(शेष पृष्ठ 3 पर)

गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा

-: स्वामी धर्मानन्द सरस्वती :-

जिस समय अंग्रेजों ने इस देश पर अधिकार करना चाहा, परंतु वे सफल नहीं हो पा रहे थे। तब ब्रिटिश सरकार ने हमारे देश में लॉड मेकाले को इस देश की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करने के लिए भेजा, तब लॉड मेकाले ने देखा कि इस देश के प्रत्येक ग्राम में स्वतंत्र शिक्षा की व्यवस्था चल रही है। गाँव का मुखिया या जमींदार सारे गाँव के सहयोग से गाँव के बालकों के लिए अध्यापन की व्यवस्था करता था। इस अध्यापन में संस्कृत भाषा के अध्यापन के साथ जीवन उपयोगी आवश्यक विषयों का भी अध्यापन कराया जाता था। इसके साथ प्रत्येक जाति के व्यक्ति अपने बालकों को घर में शिक्षा देते थे जैसे किसान अपनी संतान को कृषि एवं गो पालन की शिक्षा, वैश्य अपनी संतान को बहिखाता आदि लिखना अथवा लिखने एवं व्यापार करने की शिक्षा देता था। क्षत्रिय अपनी संतान को स्वस्थ एवं बलवान बनाने के साथ हथियार चलाने के साथ युद्ध करने एवं ब्राह्मण अपनी संतान को विद्या अध्यापन के साथ यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ करने की शिक्षा दे दिया करता था इस प्रकार प्रत्येक जाति का बालक युवक होते-होते आवश्यक विद्या को जान लेता है। परंतु अंग्रेज सरकार ने इस स्वतंत्र ग्रामीण शिक्षा प्रणाली से अध्ययन अध्यापन करना रोक दिया, जो पण्डित पढ़ाते उनको दण्ड दिया जाता इस प्रकार 40-50 साल तक ग्रामीण शिक्षा प्रणाली को पूर्णतया बंद कर दिया। अत: ग्रामों में शिक्षा का पूर्णतया अभाव हो गया तब अंग्रेज सरकार ने अपने ढंग की शिक्षा प्रचलित की उन्होंने ऐसी पुस्तकें तैयार की जिन पुस्तकों में इस देश के पूजनीय महापुरुषों की निन्दा हो उनको चरित्रहीन स्वार्थी सिद्ध करने का यत्न किया गया। जैसा उनका उद्देश्य भोग विलास करना ही हो। अंग्रेजों से पहले मुसलमानों ने भी यहाँ के पण्डितों को जागीर अर्थात् कहीं का जमीनदार बनाकर उन शिक्षित लोगों को अपने अनुकूल रखने का यत्न किया फलस्वरूप शनै:-शनै: इस देश की नई पीढ़ी अंग्रेजों के भक्त बनने चले गये अंग्रेजों को ही अपना हितैषी मानने लगे, इस देश के महापुरुषों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा तथा अंग्रेजों को अपना उद्धारक मानने लगे।

इस दुरावस्था को देखकर ऋषि दयानन्द के मन में बहुत कष्ट हुआ, उन्होंने शिक्षा पद्धति को बदलने का विचार किया। अपने सभी प्रमुख ग्रन्थों में आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन के लिए तीन चार पाठशाला खुलवाई, परंतु योग्य अध्यापक न मिलने से उन पाठशालाओं को बन्द करना पड़ा।

जब लाला मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद जी) ने देखा कि ऋषि दयानंद ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आदि में एक आदर्श शिक्षा प्रणाली का उल्लेख किया है। जब लाला मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) जी ने इस आदर्श शिक्षा प्रणाली को पढ़ा तो उन्होंने इस शिक्षा प्रणाली की परीक्षा करने के लिए गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार 60 हजार रुपया इकट्ठा करके हरिद्वार के समीप कांगड़ी ग्राम के पास प्रथम गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल में सभी प्राचीन ग्रन्थों के साथ आवश्यक आधुनिक विषयों का अध्यापन भी कराया जाता था। गुरुकुल कांगड़ी की इस सफल शिक्षा प्रणाली से सारे देश के शिक्षित वर्ग में नया उत्साह आया तथा अंग्रेज सरकार काँप गई। गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षा के पीछे अनेक गुरुकुल खोले प्रारंभिक काल में इन गुरुकुलों की प्रणाली ने नई क्रांति की। परंतु कुछ आत्म शक्तिहीन इन गुरुकुल के स्नातकों ने ही इस आर्ष शिक्षा के स्थान पर सरकार से आर्थिक सहायता लेने तथा मान्यता लेने के लिए अनार्ष पुस्तकों का अध्यापन शुरू कर दिया इससे गुरुकुल के संचालकों को जहां आर्थिक लाभ हुआ वहाँ मान सम्मान मिला परीक्षाओं की मान्यता के कारण छात्र संख्या बढ़ी, परंतु आर्ष शिक्षा समाप्त होती गई। जबकि आर्ष शिक्षा से शिक्षित युवक अल्प समय में ही महान् विद्वान बन जाता है। आर्ष शिक्षा से शिक्षित युवक वैदिक धर्म का अनुयायी एवं देशभक्त बन जाता है।

अब कुछ सज्जनों के सहयोग से गुरुकुलों का संगठन बना है। इसके अध्यक्ष आर्ष साहित्य के उच्च कोटि के विद्वान श्री स्वाम प्रणवानन्द जी गुरुकुल गौतम नगर तथा मंत्री आर्ष शिक्षा से शिक्षित प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. आनन्द कुमार जी को बनाया गया है। आशा है कि इन दोनों विद्वानों की प्रेरणा एवं पुरुषार्थ से गुरुकुलों की आर्ष शिक्षा प्रणाली को नया रूप मिलेगा। इस पवित्र कार्य में हमारा सहयोग एवं शुभकामना इनके साथ है।

किसानों के सात.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

हैं। यजुर्वेद के 40वें अध्याय का 15वाँ मंत्र कहता है। मनुष्यों की मृत्यु तक जो उसने कर्म किया है उसके अनुसार उसको योनि प्राप्त हो जाती है। मरने के बाद उस जीव के नाम से लाखों रुपए खर्च कर दो, उस जीव का उससे कोई भी संबंध नहीं है। इसके लिए अंधविश्वास और पाखंड को समाप्त करने के लिए आर्य समाज के उपदेशक कार्य कर रहे हैं। सरकार इसके लिए **ऋषि दयानन्द सरस्वती जी का लिखा हुआ सत्यार्थ प्रकाश जिसका दूसरा नाम अक्कल की पुस्तक है।** वितरण कर आर्य समाज के उपदेशकों को 15 हजार रुपए मासिक वेतन देकर ग्रामों में अंधविश्वास और पाखंड से किसान को निजात दिलाने हेतु प्रचार करवाना चाहिए।

सरकार को चाहिये की मानव समाज में व्याप्त अंधविश्वास-पाखंड के समूल नाश को अपनी कार्य प्राथमिकता में लेकर सर्वप्रामि स्कूली शिक्षा में वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन प्रारंभ करे तथा अंधविश्वास, पाखंडों को चिन्हित कर उसके पक्षधरों के वैदिक विद्वानों से शास्त्रार्थ करवाये और अंधविश्वास-पाखंडों के पक्षधरों की हार होने पर उस अंधविश्वास-पाखंड को अपराध्का कृत्य घोषित कर उस पर दण्ड के प्रावधान का कानून बनावे।

7. किसान का सातवाँ असली दुश्मन मांस, शराब, धूम्रपान आदि दुर्व्यसन- किसान एवं किसानी मजदूर परिवारों का चोली दामन का सम्बन्ध है। इन परिवारों में मांस, शराब, धूम्रपान, गांजा आदि का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि अपनी मेहनत की कमाई इन्हीं व्यसनों का आदि होकर इसी में सभी पैसा खर्च कर देता है। कर्जसे लद जाता है। आत्महत्या के लिए विवश होकर आत्महत्या कर लेता है। किसी विद्वान ने सही कहा है- **''शराब अंदर-अक्कल बाहर''**, **''जिसका बाप पिये दारू, उसका बेटा लगाये झाड़ू''**। शराब एक ऐसी बुराई है जो शराब का आदि हो गया वह मांस भी खाने लग जाता है। पापाचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार सभी गलत व्यसन करने लग जाता है। एक बार इन गलत व्यसनों में पड़ने पर वह उन व्यसनों से निकल नहीं पाता व अपनी मेहनत की कमाई इन गलत व्यसनों परखर्च कर देता है। जो सरकार के खजाने में अप्रत्यक्ष रूप से जमा हो जाती है। मांस, शराब के सेवन से विचार भी भ्रष्ट हो जाते हैं तथा उसकी शारीरिक श्रम क्षमता भी नष्ट होकर वह दीन-हीन हो जाता है। देश में अनुमानत: 200 अरब रुपए की शराब पी जाते हैं।

मनुष्यों की सभी बुराइयों की कोई जड़ है तो वह है शराब, यदि सरकार किसान व किसानी मजदूरों एवं राष्ट्र का हित चाहती हो तो शीघ्र ही मांस, शराब, धूम्रपान, गांजा आदि नशीली वस्तुओं एवं देश के सभी बूचड़खानों कत्लखाने को अतिशीघ्र सख्ती से समाप्त कर देवें। मांस, शराब का प्रचलन बढ़ाने में जितनी भी भारत में बड़ी-बड़ी कम्पनियां हैं अधिकांशत: दोषी है। कम्पनियां अपने माल की खपत हेतु डीलरों की कांफ्रेन्स करती है। उसमें मांस, शराब का डिनर देती है। मांस शराब ही परोसते हैं।

मैं ग्रीव्ज कॉटन कम्पनी का लोर्म्बाडीन इंजिन का डीलर था। औरंगाबाद के अमर प्रीत होटल में मांस, शराब परोसी गई, मैंने खाने से मना कर दिया कम्पनी का बड़ा अधिकारी कहने लगा आर्य जी मांस शराब नहीं खाओगे-पियोगे तो कंपनी के लोर्म्बाडीन इंजिन कैसे बेचोंगे। मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। हमारे साथी महाजन, जैन, ब्राह्मण आदि भी डीलर थे। मेरी नीलम होटल में शाकाहारी भोजन की व्यवस्था की गई। अंतिम दिन की बैठक में कम्पनी के अधिकारियों ने प्रत्येक डीलर से पूछा इस वर्ष आप कितने इंजिन बेचोगे तो किसी ने 5, 10, 15, 25 तक संख्या में बताये अधिकार लिखते गये जब मुझे पूछा आर्य ट्रेडर्स देपालपुर कितने इंजिन बेचोगे मैंने कहा वन हन्ड्रेड इंजिन यह सुन कर मीटिंग में सन्नाटा छा गया। अन्य डीलरों ने मन में सोचा होगा कि यह पागल हो गया है। जिला स्तर में 25 इंजिन बेचना मुश्किल है। इंदौर जिले की देपालपुर तहसील का डीलर होकर 100 इंजिन कैसे बेच सकता है?

मैंने उस सन्नाटे को तोड़ते हुए कहा कि 100 इंजिन नहीं 101 इंजिन देपालपुर सबसे पहले इंजिन भेजना मेरा ड्राफ्ट सबसे पहले कम्पनी में पहुंचेगा। अधिकारियों ने मुझे मंच पर बुलाया मेरा कम्पनी की ओर से सम्मान किया गया तालियां बजी मुझे कुछ बोलने के लिए कहा गया। मैंने कम्पनी के अधिकारियों के प्रश्न का उत्तर दिया आप कहते हैं बिना शराब पिये, मीट खाये बिना हमारे इंजिन कैसे बेचोगे मैं इस कम्पनी के अधिकारियों से कहता हूं कि राम ने कन्द, मूल, फल खाकर रावण का काम तमाम किया। कृष्ण ने दूध, दही, घी, मक्खन खाकर कंस का काम तमाम किया। समस्त डीलर व कम्पनी के अधिकारियों सुन लो शराब, मांसाहारी और शाकाहारियों में यह ताकत का अंतर है। कहते हैं मांस शराब मिलेट्री के सैनिकों की जान होती है। मैंने 4-5 सैनिकों से अलग पूछा था सबका एक ही उत्तर था 15 प्रतिशत सैनिक शराब नहीं पीते, मांस नहीं खाते हैं ये काजू, बादाम खाकर बर्फीले पहाड़ों पर सीमा की रक्षा करते हैं। इसलिए सरकार किसान के हित में शराब व बूचड़खाना, कत्लखाना अविलम्ब सख्ती से समाप्त कर देवे व राष्ट्रहित में किसानों के हित में किसानों के सात दुश्मनों को समाप्त कर देवें। **भारत भामाशाह होकरविश्वगुरु बन जाएगा।**

यह अपेक्षा तो सरकार से है किन्तु सरकार के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना भी ठीक नहीं है। अत: किसान भाईयों से विनम्र अनुरोध के साथ आह्वान करता हूं कि तुम्हारे इन असली सात दुश्मनों को समाप्त करने हेतु जी जान से जुट जाओ और अपना तथा अपने देश का भाग्य बनाओ।

पति की आयु कैसे दीर्घ हो

-: टंकारा श्री अरुणा सतीजा :-

करवा चौथ के व्रत ने दाम्पत्य जीवन पर विचारने हेतु विवश कर दिया। मन में विचित्र प्रकार के विचार एवं संशय उत्पन्न हुए। पक्ष और विपक्ष के विचारों में संग्राम छिड़ गया। सत्य को जानने के लिये कुछ इतिहास के पन्नों को उलटा, भारतीय समाज की आधारभूत परम्पराओं पर भी गहन अध्ययन किया अन्त में वेद की शरण ली क्योंकि 'वेद' सार्वभौम हैं, ईश्वरकृत है, स्व-प्रमाणित हैं और सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं।

श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण दोनों महान जन-नायक हैं। आदर्श पुरुष तथा आदर्श दम्पत्ति भी थे। दोनों महापुरुष दीर्घ आयु तथा चिरजीवी थे। रामायण, महाभारत तथा गीता में कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं है कि उनकी पत्नियां चौथ का व्रत या अन्य कोई ऐसा उपवास करती थी जिनके कारण उनको दीर्घ आयु प्राप्त हुई। नहीं! सत्य तो यह था कि उन पति पत्नियों के जीवन में समरसता थी परस्पर सौहार्द्र तथा अगाध प्रेम था। सीता सदैव श्री रामचन्द्र जी को 'हे आर्य' शब्द से सम्बोधित करती थी जो आदर सूचक शब्द है। श्री रामचन्द्र जी भी उसी प्रकार आदर सूचक शब्दों से सीता को पुकारते थे। वास्तव में यदि कोई पत्नि, पति की दीर्घ आयु, स्वस्थ तथा सुखी जीवन चाहती है तो सबसे बड़ा गुरुमंत्र है घर में शांति का वातावरण सदा बना रहे। ऐसा वातावरण बनाओ कि प्रेम की डोर कभी न टूटे। दुर्भाग्य से पति कुपथ पर चला गया है तो उसे अपनी बुद्धि तथा सहयेाग से सतपथ पर लाने का व्रत लो संकल्प करो ताकि वह दुर्व्यसनों से बच कर वह स्वस्थ, निरोगी होकर दीर्घ आयु को प्राप्त करे।

जैसे स्वामी श्रद्धानंद जी की पत्नी श्रीमती शिवदेवी का उदाहरण समस्त नारी जाति के लिये एक अनुपम एवं अनुकरणीय है। इस देवी ने अपने भटके हुए पति जो उस समय उच्श्रृखल और भोग विलास का जीवन व्यतीत कर रहे थे। बस खाना पीना और मौज उड़ाना ही जिसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था ऐसे पति से उद्दंडता का व्यवहार उस देवी ने कभीनहीं किया बल्कि अपने त्याग, सदव्यवहार, सहनशीलता तथा सेवा से उस धर्म परायण एवं पतिव्रता पत्नी ने उन्हें ऊपर उठाने, रोमान्स की भूल भुलाइयों मेंसे निकालने और पाश्चात्य सभ्यता के विनाशकारी गड्ढे में से निकालकर सन्मार्ग पर लाने में विशेष योगदान दिया। एक ऐसे पथभ्रष्ट व्यक्ति को कल्याण मार्ग का पथिक बना दिया जो आगे चल कर विश्व में महात्मा श्रद्धानंद के नाम से विख्यात हुए।

भारतीय नारी की उच्चता एवं त्याग के प्रति महात्मा श्रद्धानंद ने बड़े मार्मिक शब्दों में अपने भावों को प्रकट करते हुए लिखा है-

'वैदिक आदर्श से गिर कर भी जो सतीत्व धर्म का पालन पौराणिक काल में आर्य महिलाओं ने किया है उसी के प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुंची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक भी विद्यमान है। भारत की नारी के सत-तप-त्याग में इतनी शक्ति है कि मनुष्य को सब रूप देने में समर्थ है।

कई बार पति या परिवार के प्रति कुछ ऐसा व्यवहार होता है जो पति की भावनाओं को ठेस पहुंचाता है जो उसे आजीवन रोगी तथा आत्महत्या पर भी मजबूर कर देता है। उसे उचित आदर सम्मान व प्रेम की भावना से वंचित रखना, हर समय दूसरों के उदाहरण देकर महंगे तोहफो की मांग करना, धन कमाना परंतु आवश्यकता पड़ने पर पति तथा परिवार के लिये आर्थिक सहयोग न देना, परिवार के सदस्यों से यथा योग्य प्रीति पूर्वक व्यवहार न करना एक अच्छे पति के लिये धीमे जहर से कम नहीं है।

एक अच्छी पत्नी पति की सहधर्मी तथा अर्द्धांगिनी वह है जो पति के हृदय की पीड़ा को समझे। सच्चा पति वह पत्नी के हृदय के दुखों को जाने और परस्पर मिलकर उनको दूर कर सुखी परिवार का निर्माण करें। न कि 365 दिनों में से एक दिन व्रत रख कर अहसास कराए कि मैंने तुम्हारे लिए व्रत किया तुम ने मुझे क्या दिया। ऐसे शब्द तो पति की आयु घटाने वाले होते हैं न कि आयु बढ़ाने वाले।

सच्चा व्रत तो सीता तथा रुक्मणी ने किया। सीता बिना वनवास मिले पति सेवा तथा सुख के लिये 14 वर्षों तक वन में रहीं तथा अनेकों कष्ट झेले। महारानी रुक्मणी ने शादी के बाद श्री कृष्ण के साथ 12 वर्षों तक घोर तप किया। यहीं दोनों तो जन-जन के आदर्श हैं भगवान हैं तो हम इन के आदर्शों का अनुसरण क्यों नहीं करते। जब लक्ष्य सामने हैं, रास्ता सीधा है तो फिर भटकाव क्यों?

ईश्वर ने स्त्री पुरुष को समान माना है तो उपवास से पति को लाभ क्यों पत्नी को क्यों नहीं। ईश्वर तो कोई ऐसा भेदभाव करने वाला नहीं है कि व्रत के माध्यम से पति की लम्बी आयु का विधान बना दे और पत्नी की दीर्घ आयु के लिये उसी फार्मूले को रद्द कर दे।

पति की आयु को, वर्ष में एक बार व्रत उपवास करके बढ़ाने का कितना सरल सुलभ तथा सुखकार फार्मूला है। यदि यह व्रत इतना चमत्कारी होता तो आज तक कोई भी स्त्री यौवन अवस्था में विधवा न होती क्योंकि 80 प्रतिशत महिलाएं इस व्रत को करती हैं। किसी भी युवा की बीमारी, युद्ध या दुर्घटना में मृत्यु न होती।

यह 'सिद्धांत' भी उस अंधकार काल की देन है जिसने अनेकों अंधविश्वासों तथा कुरीतियों को जन्म दिया जैसे पत्नी की मृत्यु के पश्चात तो कई शादियां कर सकता है परंतु पत्नी अर्थात् विधवा विवाह वर्जित था।

नारी जाति महर्षि की सदा ऋणी रहेगी जिन्होंने नारी को समाज के ठेकेदारों के बंधरों से मुक्त कराया परंतु आज की शिक्षित नारी भी स्वयं को ऐसे अंधविश्वासों के बंधनों से मुक्त नहीं कर पा रही जिसका मुख्य कारण है इसकी अवहेलना पर होने वलो अनर्थ की आशंका व भय। इस भय से छुटकारा पाने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता है।

व्रत शब्द का सही अर्थ जानने के लिये वेदों की ओर लौटते हैं। वेदों में अनेकों मंत्रों में 'व्रत' शब्द आया है जैसे यजुर्वेद (1/3) मंत्र है अग्ने व्रतपते

हे प्रभु मैं सभी प्रकार के असत्य मार्ग को छोड़ने तथा सत्य अर्थात् कल्याणकारी मार्ग का पथिक बनने का 'व्रत' सदा धारण करता रहूँ।

वेद का आदेश है- व्रतं कृणुतं। यजुर्वेद 4/11

व्रत करो, व्रत रखो तथा व्रतों का पालन करो।

अत: व्रत व उपवास करना कोई गलत बात नहीं है परंतु उसे उन्हें अंधविश्वासों से जोड़ कर under force भय के कारण तथा अपरिहार्य परिस्थितियों में व्रत करना तथा ईश्वर के विधान के विरुद्ध कल्पना करके व्रत करना फलदायक नहीं बल्कि पाप है।

व्रत-उपवास करो। सप्ताह में दो बार करो परंतु अपनी निरोगता के लिये या परिवार, समाज व राष्ट्र हित के लिये करो जैसे स्व. लाल बहादुर शास्त्री जी के कार्यकाल में सभी नागरिकों ने उपवास रखा। 'व्रत' लिया कि प्रति सोमवर को एक समय भोजन करेंगे। कितना उपकार हुआ भारत माँ का इस व्रत-उपवास से। देश भयंकर अकाल की स्थिति से बच गया।

अभि प्रवन्त समनेव योषा:
कल्याण्य: स्मयमानासो अग्निम्
धृतस्य धारा: समिधो न सन्त
ता जुषाणों हर्षति जातवेदा

ऋग्वेद 4/5/8/8/यजु/7/17/

वेद के मंच के अनुसार पति की आयु बढ़ाने वाली वह स्त्रियां होती हैं जो समान मन वाली, सुंदर रूप अर्थात् उत्तम गुण-कर्म, स्वभाव तथा उच्च चरित्र वाली, मुस्कुराती या हंसती हुई स्त्रियां अर्थात् पत्नियां पति को ऐसी प्रिय होती हैं जैसे अग्नि को घी की धाराएं। ऐसे सुखमय वातावरण में केवल पति की ही क्यों परंतु पूरे परिवार की आयु बढ़ती है।

वैदिक ऋषि मुनियों सेप्रश्न किया गया कि योगी मुनियों को ब्रह्म साक्षात्कार जो असीम आनंद की अनुभूति होती है क्या वही अनुभूति सांसारिक पुरुष को भी हो सकती है। ऋषि-मुनियों का उत्तर सुनकर सारे विश्व को आश्चर्य हुआ कि सांसारिक पुरुष को ब्रह्मानन्द की अनुभूति कैसे हो सकती है तो ऋषियों ने उत्तर दिया मात्र पांच शब्दों में- मृदु, निर्मन्यु, केवली, प्रियवादनी,अनुव्रता। जो पत्नी मृदु स्वभाव की होती है, क्रोध रहित होती, पति के प्रति अनन्य भाव होता है, प्रिय भाषण देने वाली होती है और व्रत का पालन करने वाली होती है उस दम्पत्ति को ब्रह्मानन्द की अनुभूति होती है। सुखमय जीवन का कितना सुंदर चित्रण है। स्त्री, पुरुष से अधिक पूज्यनीय है क्योंकि उसका समर्पण देवताओं तुल्य है। इति

ओ३म् शांति, ओ३म् शांति, ओ३म् शांति

मानवता मर तो नहीं रही है?

-: देशराज आर्य :-

संपति मानव ने विज्ञान और तकनीकी में जल, थल और नभ में बहुआयाम उन्नाति कर ली है। विभिन्न अनुसंधान और आविष्कारों से सुख सुविधा का सामान जुटा लिया है परंतु इतना सब कुछ होने परभी मानव का सामाजिक एवं चारित्रिक पतन हो रहा है। इतना सब होने पर भी मानव को आत्मिक शांति नहीं है। घर और बाहर, बाल या वृद्ध, अबोध बालिका या वृद्धा, गरीब या अमीर, जनसाधारण या नेता और अधिकारी कोई भी सुरक्षित नहीं है। सब अकाल मृत्यु से भयभीत हैं। कब किसके साथ कहां क्या हो जाए यह भय उन्हें सदा लगा रहता है। यह भय ईश्वर का नहीं परंतु मनुष्य को मनुष्य से है। प्राकृतिक आपदा तो ईश्वरीय न्याय व्यवस्था होती है जो समान रूप से सबके साथ एक स्थान एवं समय विशेष पर होती है तथा इस आपदा में भी चमत्कारी रूप से कुछ व्यक्ति मौत के मुंह से बच निकलते हैं उन्हें खरोच भी नहीं पाती। यहां पक्षपात नहीं होता परंतु कर्म भोग का फल भुगतना पड़ता है। अपने पूर्वज कहा करते थे कि बुरे कर्म करने वाला कुत्ते की मौत मरेगा परंतु आज मनुष्य की मौत कुत्ते से भी बदतर हो गई है। शायद कुत्ते भी आपस में कहते होंगे कि तुम मनुष्य की मौत मरोगे। मनुष्य में स्वयं अपने जीवन का ताना-बाना ऐसा बुन लिया कि उस जाल से निकल पाना संभव नहीं।

मनुष्य का जीवन जब प्रकृति के साथ सहज रूप से व्यतीत होता था तब तक वह सुख चैन से रहता था। जैसे जैसे मनुष्य ने जीवन के आधारभूत सांस्कृतिक नैतिक मूल्य जो पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे थे भुला दिये, तभी से उसका विनाश शुरू हो गया। सबसे ज्यादा विकृति मनुष्य के मस्तिष्क में हो रही है जो पशुवृत्ति से भी बदतर है। अढ़ाई-तीन वर्ष की अबोध बालिका के साथ कुकर्म तथा फिर उसकी हत्या घृणा की पराकाष्ठा है। पशु भी मर्यादा में रहते हैं तथा जीवन की सहज क्रियाएं प्रकृति नियमों के अनुसार करते हैं। अनेक ऐसे दृष्टांत एवं प्रसंग है जहां पशुओं का अपने जंगल राज मनुष्य के राज से अच्छा साबित होता है जहां मनुष्य का हस्तक्षेप नहीं वहां प्रकृति सहज रूप से चलती है। जबान रहित पशुओं के व्यवहार से मानव बहुत कुछ सीख सकता है। पचास के दशक में गांवों के पास जंगल (बणी) लगते थे तथा उनमें हिंसक जानवर भी रहते थे। गीदड़, भेड़िया, लोमड़ी, जरख तो प्राय: जब-तब नजर आते रहते थे। एक व्यक्ति के तीन और पांच वर्ष के अबोध बच्चे साथ लगते जंगल में भटक गये। कुछ समय बाद ही बच्चों के गुम होने का समाचार गांव में फैल गया। सभी ने जहां-तहां आस-पास तलाश की परंतु बच्चे नहीं मिले। दूसरे दिन भी तलाश की परंतु कुछ पता नहीं लगा। तीसरे दिन मां-बाप एवं गांव वालों ने सोचा कि कोई बच्चों को चुरा ले गया और अब बच्चे नहीं मिलेंगे। दिन ढलने पर गांव का एक व्यक्ति जंगल में अपने पशुओं को चराकर गांव लौट रहा था तो एक पेड़ के पास उसे दोनों बच्चे दिखाई पड़े। नजदीक गया तो उसे लगा वह बेहोश हैं। कंधों पर बैठाकर दोनों को वह जंगल से बाहर ले आया। गांव की भीड़ जमा हो गई कि बच्चे मिल गये तथा जीवित है। लगभग 60 घंटे अंतराल के बाद बच्चे उन्हें मिले जो बिना भोजन पानी के बेहोश थे। परंतु जंगल में चींटी ने भी उनको नहीं काटा जबकि हिंसक जानवर उनको नोच डालते। यह प्रकृति का नियम कानून था कि वे सुरक्षित रहे। आज बच्चे बाहर क्या घर और स्कूल में भी सुरक्षित नहीं। मनुष्य रूप में खूंखार भेड़िये अवसर की तलाश में रहते हैं कि कब उन्हें मौका मिले और वह उस पर पाशविक घिनौना अत्याचार करें। आजं अधिकांश घटनाएं अपने परिचित और निकट संबंधियों द्वारा की जाती है। मनुष्य वहशी बन गया है, कामाग्नि से ग्रसित हो गया है।

एक शिक्षाप्रद प्रसंग है। श्रीराम ने वन में रहते हुए अपने छोटे भाई लक्ष्मण से एक बार पूछा कि लक्ष्मण कहीं किसी को एकांत में कोई सुंदर युवा स्वर्ण आभूषणों से सजी-धजी स्त्री मल जाए तो कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसकी नीयत खराब ना हो, मन विचलित ना हो, बुरी नजर काम वासना से प्रेरित ना हो और उस स्त्री को आदर सहित घर पहुंचाए? लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि जिस व्यक्ति के माता-पिता चरित्रवान हैं, संस्कारित, सात्विक और ईश्वर से डरने वाले हैं उनकी संतान ऐसे मौकों पर भी विचलित नहीं होती। उन्हें न रूप, न यौवन और न धन विचलित कर सकता है। वे ऐसे अवसरों पर भी निष्कलंक रहकर माता-पिता का नाम रोशन करते हैं। क्या हम आज के समाज में यह कल्पना कर सकते हैं? घी और आग का बैर होता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि युवावस्था में मां-बेटे, पिता-बेटी को भी एकांतवास नहीं करना चाहिये। जीवन के आदर्श मूल्य अब समाप्त हो चुके हैं। मानव एक प्रकार से निष्प्राण व ज्ञानशून्य हो चुका है। कहीं अन्याय, अत्याचार हो रहा हो तो वह वहां से मुंह फेर कर निकल जाता है। देखकर भी अनदेखा करता है। पशु भी पशु का दर्द पुकार सुनकर उसके पास दौड़ा चला आता है तथा उससे बन सकता है वह करता है। मनुष्य का तो निर्माण ही ईश्वर ने दूसरों का भला करने हेतु किया है। मनुष्य होने का भाव मनुष्यता है और मनुष्यता सदैव परोपकार की प्रेरणा देती है।

आज हमें समाज में **लिव एण्ड लैट लव** जियो और जीने दो का सिद्धांत अपनाना होगा। कमजोर बलहीन तो प्राय: जुल्म का शिकार बनता ही रहता है कभी-कभी ताकतवर भी स्वयं शिकार बन जाता है। कोई भी अपने आपको सुरक्षित नहीं रख पायेगा जब तक मानवीय मूल्यों का निर्वहन नहीं होगा। जिस प्रकार प्राणी के जीवित रहने हेतु **हवा और पानी** की आवश्यकता है, **मशीन के लिए तेल** की आवश्यकता है, उसी प्रकार मनुष्य के लिये **अच्छे संस्कार, सचरित्र और सात्विक विचार** आवश्यक है। मनुष्यों से परिवार, परिवारों से समाज और समाज से राष्ट्र बनता है। यदि प्रत्येक मनुष्य मानवीय मूल्यों का पालन करेगा तो राष्ट्र भी महान बनेगा। आज मनुष्य कृषि, व्यापार और उद्यम सफल बनाने हेतु पूर्व योजना एवं बजट बनाता है, परंतु मानव संस्कृति को जीवित रखने, आगे बढ़ाने हेतु **मां-बाप संतान उत्पत्ति** की कोई योजना तैयार नहीं करते। **सहज भाव से खेल-खेल में अनचाहे ही संतान उत्पन्न** हो जाती है। ऐसी संतान तो खेत में फसल के साथ स्वयं उगी खरपतवार है जो असली फसल को भी हानि पहुंचाती है। परिवार और समाज का निर्माण करने हेतु संस्कारवान संतान पैदा करनी होगी। यदि यथावत स्थिति जमी रही तो रही सही मनुष्यता भी नष्ट हो जाएगी और मनुष्य स्वयं काल का ग्रास बन जाएगा।

तापमान को 2 नहीं, डेढ़ डिग्री पर रोका तो ही दुनिया बचेगी

-**आरती खोसला,** डायरेक्टर, क्लायमेट ट्रेंड्स

जलवायु परिवर्तन में दुनिया का औसत तापमान औद्योगिक युग के प्रारंभ की तुलना में एक डिग्री सेल्सियस बढ़ादिया है। ऐसा ही रहा तो 2040 तक तापमान 1.5 डिग्री, 2065 तक 2 डिग्री और 2100 तक 4 डिग्री बढ़ जाएगा। केरल में बाढ़ से कैलिफोर्निया में लगी भीषण आग तथा सूखे, तूफान और ग्लैशियरों के पिघलने तक, एक डिग्री की वृद्धि ने ही दुनिया पर कहर ढहा दिया है। अभी मानव सभ्यता में धरती का तापमान सबसे तेज गति से बढ़ रहा है। पिछले हफ्ते, 'यूएस नेशनल असेसमेंट ऑन क्लायमेट चेंज' रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इसमें यही कहा गया है। इस रिपोर्ट को अमेरिकी विज्ञान की बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। इसमें 300 से ज्यादा शोधकर्ताओं व विश्लेषकों के दशकों के सम्मिलित प्रयासों का निष्कर्ष है। 2015 से ही अमेरिकी सरकार, विश्वविद्यालयों व बिजनेस जगत के वैज्ञानिकों ने हजारों अध्ययनों को पढ़ा, उनका सार निकाला और उन्हें मिलाकर यह दस्तावेज तैयार किया है। इससे इसका महत्व समझा जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर्सरकारी समिति (आईपीसीसी) ने हाल में जारी विश्लेषण में कहा है कि पर्यावरण सुधार की लागत आज उससे बहुत कम है, जो निष्क्रियता दिखाने पर भविष्य में चुकानी पड़ेगी। मसलन केरल की बाढ़ से 20,000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ, जो 2017 में देश में आई सारी बाढ़ों के नुकसान से ज्यादा है। आईपीसीसी के मुताबिक यदि तापमान को 2 डिग्री वृद्धि पर रोका गया तो वे ही अपनी रक्षा कर पाएंगे, जिनके पास संसाधन है। तापमान वृद्धि डेढ़ डिग्री पर रोकी तब निर्धन वर्ग की रक्षा होगी, जबकि दुनिया तो साढ़े तीन डिग्री वृद्धि की ओर दौड़ रही है। वायु प्रदूषण एक अन्य खतरा है। दिल्ली में विश्व स्वास्थ्य संगठन की सीमा से दस गुना अधिक वायु प्रदूषण है। देश के सभी शहरों व ग्रामीण इलाकों तक में कमोबेश यही स्थिति है। मैंने इसी माह जेनेवा में हुई वायु प्रदूषण पर हुई दुनिया की पहली ग्लोबल कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। यह दुखद है कि 2016 में भारत में वायु प्रदूषण के कारण पांच साल से कम उम्र के कम से कम एक लाख बच्चों की मौत हुई। यह दुनिया में सर्वाधिक है।

प्रतिष्ठित लांसेट एनालिसिस में कहा गया है कि वायु प्रदूषण से हर साल दुनिया में 30 लाख अकाल मौतें होती हैं। दिल्ली के प्रमुख पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. अरविंद कुमार ने दिखा दिया है कि सिगरेट न पीने वालों व महिलाओं में लंग कैंसर में असाधारण वृद्धि हुई है। यह वायु प्रदूषण का नतीजा है। धरती के बढ़ते तापमान से इसका सीधा संबंध है। मैं जब पोलैंड में दिसंबर में शुरू हो रहीं संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन पर होने वाली सालाना कॉन्फ्रेंस के लिए तैयारी कर रही हूँ तो यह साफ हो रहा है कि पर्यावरण संरक्षण आर्थिक विकास में बाधा नहीं है बल्कि इसका अनिवार्य और उचित अंग है।

आर्य समाज और डॉ. भीमराव अम्बेडकर

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म सन् 1824 में और बलिदान 1883 में हुआ।

आर्य समाज की स्थापना के 16 वर्ष बाद और स्वामी दयानंद के देहावसान के लगभग 8 वर्ष बाद 14 अप्रैल, 1891 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर का महू (मध्यप्रदेश) में जन्म हुआ। यह तो स्पष्ट ही है कि डॉ. अम्बेडकर के काल में स्वामी दयानंद शरीर रूप में विद्यमान नहीं थे पर आर्य सामाजिक आंदोलन के रूप में उनका यश शरीर जरूर विद्यमान था। डॉ. अम्बेडकर की ग्रन्थ संपदा इस बात की साक्षी है कि ये स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज तथा उनके अनुयायियों की गतिविधियों से अच्छी तरह सुपरिचित थे। प्रस्तुत काल में आर्य समाज का आंदोलन अपने पूरे यौवन पर था, जिसका प्रभाव डॉ. अम्बेडकर और उनके युग पर निश्चित रूप से पड़ा है। दयानंद करुणा सागर थे। माननीय डॉ. अम्बेडकर के अंतकाल में भी करुणा की अंत: सलिला सदैव प्रवाहित होती रही।

स्वामी दयानंद गुजराती होते हुए भी मूलत: तिवारी ब्राह्मण थे। वैसे ही डॉ. अम्बेडकर भी मध्यप्रदेश में जन्म लेने के बावजूद मूलत: तथाकति शूद्र (महार) कुलोत्पन्न महाराष्ट्रीय के रूप में सुप्रसिद्ध हुए। जिस समय महाराष्ट्र में (तत्कालीन मुम्बई राज्य में) 'रानडे-फुले-युग' का अस्त हो रहा था, उसी समय वहां श्री सयाजीराव गायकवाड़, राजर्षि शाहू महाराज तथा डॉ. अम्बेडकर के युग का उदय हो रहा था। यह दूसरी पीढ़ भी अपनी पूर्ववर्ती दयानंद-रानडे-फुले आदि महापुरुषों की कार्यप्रणाली से प्रभावित और प्रेरित रही है। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज, स्वामी दयानंद और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज से अधिक प्रभावित थे तो डॉ. अम्बेडकर महात्मा फुले और उनके द्वारा स्थापित सत्य-शोधक समाज से। श्री सयाजीराव गायकवाड़ और राजर्षि शाहू महाराज आर्य समाजी होते हुए भी सत्य-शोधक-समाज के भी सहयोगी ओर प्रशंसक रहे। डॉ. अम्बेडकर महात्मा फुले के भक्त होते हुए भी स्वामी दयानंद और उनके आर्य समाजी आंदोलन के प्रशंसक होने के साथ-साथ समालोचक भी हैं, पर उन्हें आर्य नरेश द्वय श्री गायकवाड़ और राजर्षि शाहू की तरह आर्य समाज आंदोलन के सहयोगियों में नहीं खड़ा किया जा सकता। हां, आर्य समाजी आंदोलन के डॉ. अम्बेडकर हमेशा से हितैषी रहे हैं उनके लिए स्वामी दयानंद की तुलना में महात्मा फुले अधिक अराध्य रहे।

आर्य नरेशों द्वारा डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा-दीक्षा- डॉ. भीमराव अम्बेडकर को इंटर पास करने के बाद बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी., डी.एस.सी. (लंदन), एल.एल.डी., बार एट लॉ जैसी उपाधियों से विभूषित और प्रकांड पंडित बनाने में आर्य समाजी आंदोलन का प्रत्यक्ष नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप में क्यों न हो, अविस्मरणीय योगदान रहा है। इस बात को और कोई जाने या न जाने स्वयं डॉ. अम्बेडकर जरूर जानते थे। इसलिए भी उनके ग्रंथों में आर्य समाजी आंदोलन के प्रति विशेष सहानुभूति भर आती है। जहां आर्य नरेश श्री सयाजी राव गायकवाड़ ने 1912 से 1915 तक डॉ. भीमराव अम्बेडकर को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिष्यवृत्तियां प्रदान की और उन्हें अमेरिका भेजा, वहां अपने आपको हृदय से आर्य समाजी कहलाने वाले राजर्षि शाहू महाराज ने भी 1919 से 1922 तक अम्बेडकर जी को विदेश जाकर अध्ययन के लिए आर्थिक दृष्टि से संपूर्ण सहयोग दिया था।

आर्य समाज की प्रगतिशील दृष्टि- बड़ौदा नरेश सयाजी राव गायकवाड़ और कोल्हापुर नरेश राजर्षि शाहू का स्वामी दयानंद और आर्य समाज की ओर आकृष्ट होने का महत्वपूर्ण कारण है, आर्य समाज की वेद विषयक प्रगतिशील दृष्टि। इन क्षत्रिय राजाओं को तत्कालीन रूढ़िवादी पंडित शूद्र समझते थे और इसी कारण इन्हें वेदोक्त संस्कार का अधिकार प्रदान करने के लिए तैयार न थे, जबकि स्वामी दयानंद की दृष्टि में वेद पढ़ने का अधिकार मानव मात्र को था। महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवजी का यज्ञोपवीत संस्कार करने में हिचकिचाहट करने वाली रूढ़िवादी पंडितों की पम्पराओं संकीर्णता 20वीं सदी में ज्यों की त्यों बनी हुई थी, जबकि स्वामी दयानंद ने वेद के आधार पर ही यह सिद्ध किया था कि मानव मात्र के साथ समस्त स्त्री-शूद्रों को भी वेदाध्ययन करने का अधिकार है। रूढ़िवादी पंडितों की इस संकीर्णता से बेचैन होकर श्री सयाजी राव गायकवाड़ और शाहू जी महाराज आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए। इन आर्य नरेशों ने मात्र डॉ. भीमराव अम्बेडकर को ही नहीं, अपितु अन्य प्रतिभावान दलितों को भी छात्रवृतियां प्रदान की थी।

'आर्गेनिक (जैविक) कृषि' क्षमता कैसे बढ़े ?

-: प्रो. वीर बहादुर सिंह :-

प्रकृति के साथ संतुलन कायम रखते हुए खेती करना जैविक खेती है। प्रत्येक जीव के लिए जमीन (धरती), जल, वायु, ताप (सूर्य) तथा आकाश (पर्यावरण) आधारभूत आवश्यकताएं हैं। स्वयं मनुष्य का जीवन भी इन अवयवों पर आधारित है। विगत लगभग 50-60 वर्षों से मनुष्य ने अकेले जीने का प्रयत्न किया है, जबकि प्रकृति में सह-अस्तित्व प्रधान है।मानव तो क्या, जगत का कोई भी जीव सह-अस्तित्व के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता। मानव ने अपने स्वार्थ तथा लालच के लिए दूसरे जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों को लगभग संपूर्ण विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है, अनेकों योनियां-प्रजातियां तो लुप्तप्राय: हो चुकी हैं। दूसरी तरफ अनाप-शनाप बढ़ते औद्योगिकरण ने हमारी वायु, जल, पर्यावरण आदि को भी काफी दूषित तो किया ही है, क्षमता से अधिक दोहन करने से जल की कमी तो हो ही रही है। सांस लेने के लिए कई जगह शुद्ध वायु उपलब्ध न होने से ऑक्सीजन सिलेण्डरों की आवश्यकता होने लगी है।

मानव की यह प्रवृत्ति है कि वह स्वयं सभी संसाधनों का दोहन कर अकेला जीवन जीने का प्रयत्न कर रहा है। इसमें उसे सफलता तो कदापि नहीं मिलेगी परंतु उससे पहले वह अनेकों दैवीय विपदाओं-आपदाओं आदि को इतना उत्पन्न कर देगा कि भयंकर संकट खड़ा हो जायेगा और फिर समूल विनाश को मानव स्वयं देखेगा। अनेकों भयंकर बीमारियां, विकृत पेदा होते नवजात, अल्प आयु में मौतें, चक्रवात, ओले, हिमस्खलन, बाढ़, सूखा, कीड़े-मकोड़ों का प्रकोप, विभिन्न प्रकार की फसलीय व्याधियां, दुर्घटनाएं आदि अनेकों लक्षण हम नित देख रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में धरती और गाय को 'माता' कहा गया है, तीसरी माता 'गंगाजी' है, जो स्वच्छ जल का पर्याय है। किसी माता के शरीर को हम विषैले पदार्थों से दूषित करते जावें और यह अपेक्षा करें कि माता हमें शुद्ध दूध, आहार, अन्न व वनस्पतियां तथा जल प्रदान करेगी, क्या यह संभव है? अब समय आ गया है जब 'केन्द्रीय खाद्य प्राधिकरण' को (फस्साई) को उत्तरदायी बनाने की आवश्यकता है। 'मेलामाइन' रसायन के दूध में प्रोसेसिंग और पैकेजिंग करते समय मिलाये जाने के समाचार हैं, सोशल मीडिया पर इस बाबत एक वीडिया भी वायरल हो चुका है। इससे भी कहीं अधिक भयानक बात तो यह है कि फस्साई ने इस रसायन की कुछ मात्रा दूध में होना स्वीकार योग्य माना है? यदि यह सच है तो लानत है ऐसी संस्थाओं पर, जो सरकारी संरक्षण में रहते बच्चों, बीमारों, वृद्धों आदि की स्वास्थ्य रक्षा तो दूर, उनके जीवन से खिलवाड़ में प्रेरक हों?

मेलामाइन रसायन कैंसर कारक है, इससे मेल्योवेयर नामक प्लास्टिक के हल्के व टूटने वाले बर्तन बनते हैं। दूध में इसकी उपस्थिति छोटी से छोटी मात्रा में भी वांच्छित नही है। एक प्रकाशित सर्वे रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक भारत की 80 प्रतिशत आबादी कैंसर से ग्रस्त होगी। लक्षण साफ दिख रहे हैं, हो सकता है यह आंकड़ों की प्राप्ति हमें उससे कहीं पहले ही हो जाये।

हमारी धरती (मृदा) जीवंत है। इसके अंदर अनेकों जीवों व जीवाणुओं का जीवन सतत चलता रहता है और इन्हीं की जीवन क्रियाओं के फलस्वरूप हमारी धरती की उत्पादक क्षमता बनी रहती है। इन जीवों में कुछ दिखाई देने वाले (केचुआ आदि) और अनेकों जीव, जो आंख से दिखाई न देने वाले हैं, जिन्हें जीवाणु कहते हैं। अनेकों जीवाणु वातावरण से नाइट्रोजन ग्रहण कर मिट्टी में एकत्रित करते हैं, फिर नाइट्रोजन के लिए यूरिया या अमोनियम खाद की आवश्यकता क्यों है? यूरिया अथवा अन्य रासायनिक उर्वरक देने से मृदा का वातावरण दूषित हो जाता है, जो अनेकों जीवों व जीवाणुओं के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

आज हम गायों के आहार में भी यूरिया मिलाने लगे हैं। गाय को अनेकों रसायन जैसे- हारमोन, एण्टीबायोटिक वृद्धिकरण पदार्थ खिलाने का प्रचलन भी बढ़ रहा है। यह सब किसी न किसी रूप में मनुष्य के शरीर में पहुंचता ही है और समय आने पर अपना दुष्प्रभाव दिखाता है। अत: आज की महत्ती आवश्यकता है कि हम खेती में, पशुओं के आहार में, सिंचाई के पानी में किसी भी प्रकार के रसायनों के प्रवेश को रोकें। जहां तक हो सके उर्वरा शक्ति के लिए गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद, उचित फसल चक्र अपना कर खेती करें। गांवों में अब कुकिंग गैस की उपलब्धता होने से किसानों को गोबर ईंधन के रूप में कम खर्च करना पड़ेगा। ऐसे में गोबर और गौमूत्र एकत्रित कर गोबर खाद बनावें और उसे खेतों में डालकर मृदा की उत्पादक क्षमता बढ़ावें। इससे शनै: शनै: मृदा में ह्यूमन बढ़कर फसल को अधिक पोषण मिलेगा और उपज अधिक होगी।

कीटनाशक की जगह अब कई बायोकीटनाशक और बायोव्याधिनाशक उत्पाद मिल रहे हैं, उन्हें अपना कर फसलों की सुरक्षा की जा सकती है। हरी खाद की फसलें और दलहनी फसलों से मृदा की उर्वरा शक्ति कायम रहती है, दलहनी फसलों की जड़ों में छोटी-छोटी आकार की अनेकों गांठें होती हैं, जिनमें जीवाणु विद्यमान होते हैं जो नाइट्रोजन का संश्लेषण करते हैं, जो फसल कटने के बाद भूमि में ही रह जाती है। इस तरह प्राकृतिक रूप में वह सब कुछ हो रहा है जिसकी मानव को जरूरत है। अत: 'जीयो और जीने दो' के सिद्धांत के आधार पर जैविक खेती/पशुपालन करके ही हमारा भविष्य सुखमय व सुरक्षित हो सकता है।

लोकतंत्र का प्रहरी 'मिजोरम'

-: अश्विनी कुमार :-

देश के जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं उनमें उत्तर पूर्व का 'मिजोरम' राज्य भी है जिसकी चर्चा उत्तर भारत की राजनीति की आपाधापी में नाममात्र की हो रही है मगर भारतीय लोकतंत्र के चुनावी तंत्र में अपनी जगह बना बैठी विभिन्न विसंगतियों को जिस तरह इस छोटे से पहाड़ी राज्य की जनता ने अपने बीच पैठ बनाने से रोका है वह समूचे भारत की जनता के लिए ऐसा अनुकरणीय उदाहरण है जो इस राज्य को अनूठा साबित करने के साथ ही राजनीति को नई दिशा देता है और राजनीतिज्ञों को सदा जनता का सेवक बने रहने का रास्ता दिखाता है। यहां जो भी चुनाव होते हैं वे जाहिर तौर पर चुनाव आयोग की निगरानी में ही होते हैं मगर इसकी भी निगरानी करने के लिए स्वयं मिजो जनता 'खुदाई खिदमतगारों' की तरह काम इस तरह करती है कि चुनाव में मतदाताओं को लुभाने के लिए कोई भी राजनैतिक दल गलत तरीकों का इस्तेमाल नहीं कर सकता और न ही मुफ्त भेंट देने का वादा कर सकता है। यहां की मिजो जनता की मिजो पीपुल्स फोरम (मिजो नागरिक मंच, गैर सरकारी संस्था) चुनावों की निगरानी के लिए खुद अपने स्वयं सेवकों के माध्यम से राजनैतिक दलों को आगाह करती है कि यदि उन्होंने किसी भी प्रकार के अवैध तरीकों का इस्तेमाल मतदाताओं को रिझाने के लिए करने की कोशिश की तो उन्हें अवांछनीय तत्वों की श्रेणी में डाल दिया जायेगा। इस मंच के सदस्रू मिजोरम के युवक-युवती हैं और प्रत्येक ईसाई युवक इसमें शामिल होना अपने लिए सम्मान समझता है परंतु नागरिक मंच राज्य ईसाई चर्चों के निर्देशन में काम करता है क्योंकि यहां 90 प्रतिशत के लगभग जनसंख्या ईसाई है। चर्चों की राजनीति में कोई भूमिका नहीं है मगर वे प्रतयेक नागरिक को हिदायत देते हैं कि चुनाव पूर तरह सादगी और बिना किसी लालच में आये होने चाहिएं और इसके लिये भारत के संविधान के अनुसार चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुसार पालन होना चाहिए। धार्मिक संस्थानों की लोकतंत्र में निरपेक्ष भूमिका का यह खूबसूरत उदाहरण भी है। अत: मिजो नागरिक मंच चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक राजनैतिक दल के साथ एक आशय पत्र (मेमोरेंडम आफ अंडरस्टैंडिंग) पर समझौता करता है कि वह चुनाव आयोग के निर्देशों का पालन करते हुए चुनाव उसकी नियमावली के अनुसार लड़ेगा और मतदाताओं को रिझाने के लिए मदिरा व धन आदि का उपयोग नहीं करेगा। उसका चुनाव प्रचार पूरी तरह सादगी से भरा होगा और वह केवल नीतियों की बात करेगा। अत: पूरे चुनावी दौर में मिजो मंच के सदस्य स्वयं ही चुनाव प्रचार से लेकर प्रत्याशियों के तौर-तरीकों पर निगरानी रखते हैं और जरा भी गड़बड़ी पाये जाने पर आशय पत्र के अनुसार प्रत्याशी को अवांछित राजनैतिक व्यक्ति बता कर उसे सजा देने का अधिकार भी रखते हैं। एक प्रकार से चुनाव आयोग की आचार संहिता को लागू करने का बीड़ा स्वयं ही यहां की जनता उठाती है। अत: यह बेवजह नहीं कि मिजोरम विधानसभा में विपक्ष कभी भी अध्यक्ष के आसन के निकट आकर नारेबाजी या शोरशराबा नहीं करता। उसे सरकार का जो भी विरोध करना होता वह संसदीय नियमों के तहत ही मर्यादा में रहकर करता है। गौर से देखा जायेतो मिजोरम का प्रजातंत्र हमें उस शक्ति का आभास कराता है जिसे 'लोगों की सरकार लोगों के द्वारा और लोगों के लिए' कहा जाता है। इस प्रणाली में अंतिम मालिक लोग अर्थात् आम जनता ही होती है और उनके अधिकारों की रक्षा करने का दायित्व उन लोगों का होता है जो चुने जाते हैं। इन चुने हुए लोगों का कर्तव्य होता है कि वे अपनी विजय के लिए किसी भी अवैध तरीके का इस्तेमाल न करें क्योंकि ऐसा होते ही उनके जनता के सच्चे प्रतिनिधि होने का दावा खारिज हो जायेगा। यह प्रतिनिधित्व पाने के लिए उन्हें केवल वही रास्ता अख्तियार करने की छूट है जिसकी इजाजत संविधान देता है। इसे पार करते ही उनकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा किया जा सकता है क्योंकि सत्ता में आने के लिए मतदाताओं को लालच देना उनकी राजनैतिक अन्तर्चेतना को सुप्त करना है। चूंकि चुनाव एक राजनैतिक प्रक्रिया है अत: इसमें मतदाताओं की राजनैतिक अन्तर्चेतना को शराब बांटा कर या धन बांट कर संवेदनशून्य बना देना किसी गंभीर अपराध से कम नहीं आंका जा सकता। अत: मिजोरम में चर्च की भूमिका राजनीति में सदाचार को स्थापित करने की है परंतु दक्षिण भारत की राजनीति में जिस तरह मुफ्त भेंट बांटने की परंपरा विकसित हुई है वह भी इसी श्रेणी में आती है। चुनावों के आने से कुछ समय पहले ही जिस प्रकार सत्तारूढ़ सरकारें खैरात बांटती हैं उसे भी किसी तौर पर जायज नहीं ठहराया जा सकता है। इसके साथ ही उत्तर भारत में भी इसका अनुसरण शुरू हो गया है और जिस तरह यहां की जातियों व धर्म केनाम पर वोट मांगे जाते हैं वे भी पूरी तरह प्रजातंत्र के खिलाफ हैं लेकिन उत्तर व दक्षिण भारत के राज्यों में तो चुनाव पूर्व रात्रि को जमकर शराब बांटने को जीत का फार्मूला माना जाने लगा है। चुनाव आयोग के लिए भी इसे रोकना टेढ़ी खीर साबित हो जाता है। दक्षिण के तमिलनाडु व अन्य राज्यों में (केरल को छोड़कर) तो 'वोट के लिए नोट' को चुनावी शिष्टाचार में यहां के विभिन्न राजनैतिक दलों ने जिस प्रकार बदला है उसे रोकने के लिए चुनाव आयोग को विशेष दलों का गठन करना पड़ता है परंतु केवल 40 सीटों वाली विधानसभा के मालिक मिजो लोगों ने यह काम अपने हाथ में लेकर पूरे देश को नया रास्ता दिखाने काप्रण जिस तरह लिया हुआ है उससे उम्मीद की वह किरण जरूर फूटती है कि लोकतंत्र को केवल भारत की जनता ही मजबूत बना सकती है। अक्सर हम सुनते रहते हैं कि कुछ लोग टीवी पर आकर भाषण झाड़ते हैं कि लोकतंत्र में केवल अधिकार ही नहीं होते बल्कि कर्तव्य भी होते हैं, मगर ये लोग कभी यह नहीं कहते कि नागरिकों का पहला कर्तव्य साफ-सुथरे चुनाव होते देखना होता है क्योंकि भ्रष्टाचार को जन्म देने का असली स्रोत यही है।

इस तरह से नागरिकों का ध्यान हटाने के लिए सारी कसरतें की जाती हैं और उन्हें भटकाया जाता है। बल्कि किसी भी राजनैतिक दल के नेता के ऐसी हरकतों में पकड़े जाने पर उसके बचाव में पूरा राजनैतिक दल ही उतर जाता है और उल्टे अपने विरोधी को लपेटने में लग जाता है मगर कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं हो सकती। इसके लिए हमें वह मिजोरम रास्ता दिखा रहा है जिसे 1987 में ही विधिवत पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और वहां पहली बार विधानसभा चुनाव भी हुए परंतु मतदान में ईवीएम मशीनों की विश्वसनीयता को लेकर जो विवाद खड़ा हुआ है, उससे चुनाव आयोग की भूमिका भी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए इस प्रकार बदल रही है कि वह उनके कर्तव्यों का संरक्षक बन सके क्योंकि मतदाता का पहला अधिकार अपनी मनपसंद की सरकार बनाने का है तो उसका कर्तव्य यह देखने का भी है कि उसने जिस प्रत्याशी को मत दिया है, वह उसे ही मिला है? इसका संरक्षण केवल चुनाव आयोग ही कर सकता है। मध्यप्रदेश से जिस प्रकार की खबरें ईवीएम मशीनों को लेकर आ रही हैं वे आम मतदाता में चिंता तो पैदा करती ही है।

हृदय गुव्हा में ब्रह्म विराजे

हृदय गुव्हा में ब्रह्म विराजे, कहां ढूंढने जाऊँ
सबके हृदय में आप विराजे किसे पराया पाऊ॥
मैं नित इत-उत क्यों व्यर्थ ठोकरें खाऊं।
हृदय में अपने झांकू पल में दर्शन पाऊं॥
यहां वहां जहां देखूं सर्वत्र ही प्रकट पाऊं।
सृष्टि का कण-कण बोल रहा महिमा किसे सुनाऊं॥
गुणानुवाद नित करके उसका ध्यान मग्न हो जाऊं।
अपना जीवन पवित्र करके उसका ही हो जाऊं॥
परब्रह्म की महिमा देख-देख में अति हर्षाऊं।
कृपा आपकी मुझ पर इतनी कृतज्ञता कैसे जताऊं॥
बलीवैश्व को बांटे बिना अकेला कैसे खाऊं।
सब उसी का दिया हुआ, अपना कैसे बताऊं॥

राजे स्वयं बताती है, उच्च सोपानों को
कोई तैयार तो हो इन पर जाने को॥
इस जगहमें कितने ही आये और मर गये,
स्मृति चिन्ह उन्हीं के दिखे जो कुछ कर गये॥
हृदय के दर्पण में है वास परमेश्वर का,
दर्पण को शुद्ध कर और दर्शन कर उसका॥
ईश उपासना इतनी की कि अपना घर लुटा बैठे,
निकटता इतनी की कि उसी के घर जा बैठे॥
जिगर के आईने में है तस्वीरें परवर दिगाम की,
जहचाहा गर्दन झुकाई और दीदार की॥

-अम्बालाल विश्वकर्मार्य

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

खुदीराम बोस

जिनके सीने में रोशन, देशभक्ति के चिराग।
दिल तो दिल, दिल की तरह, उनके दहकते हैं दिमाग॥

पहले कंपनी-सरकार और उसके बाद फिर भारत में ब्रिटिश-सरकार दोनों का ही प्रथम मुख्यालय कलकत्ता ही था। इसलिए अंग्रेजियत का प्रथम बोलबाला भी बंगाल में ही हुआ था। अंग्रेजी शिक्षा का पहला प्रचार-प्रसार भी बंगाल में ही हुआ और शीघ्र ही बंगाल का जन-मानस अंग्रेजियत में रचने-बसने लगा। उसी बंगाल की राजधानी कलकत्ता में सन् 1891 में एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में खुदीराम बोस ने जन्म लिया। उन दिनों विद्रोह की ज्वाला तो धधकने लगी थी और जब तक खुदीराम बोस ने जन्म लिया। उन दिनों विद्रेह की ज्वाला तो धधकने लगी थी और जब तक खुदीराम बड़े होकर कॉलेज में शिक्षा के लिए पहुँचे तब तक विद्रोह की ज्वालाएँ आकाश को स्पर्श करने के लिए लपलता रही थीं।

अंग्रेज सरकार का कोई भी अधिकारी विद्रोही भारतीयों पर ही नहीं अपितु सामान्य भारतीयों पर भी प्रहार करने से नहीं चूकते थे। ऐसे में कलकत्ता का मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड तो सर्वाधिक क्रूर व्यक्ति सिद्ध हो रहा था। देशभक्त युवकों को जब उसकी अदालत में लाया जाता था तो वह उन्हें कठोर से कठोरतम दण्ड देने का यत्न करता था। कारागार में उन युवकों को यातनाएँ दी जाती थीं। उसके परिणामस्वरूप नवयुवकों में उससे बदला लेने की भावना जगी और वे इसके लिए प्रयत्न करने लगे। किसी प्रकार इसकी भनक किंग्सफोर्ड के कानों में जब पड़ी तो उसने कलकत्ता से अपना स्थानान्तरण करवा लेना उचित समझा। उसका स्थानान्तरण मुजफ्फरपुर हो गया। इसके साथ ही उसकी प्रोन्नति भी हो गई। उसे मुजफ्फरपुर का जिला जल बनाया गया था। इतना ही नहीं उसकी रक्षा के लिए नित्य ही उसके साथ दो सिपाही रहने लगे।

देशभक्त युवक, जिन्हें विद्रोही कहा जाता था, वे कब शान्त बैठने वाले थे। कलकत्ता और मुजफ्फपुर में उनके लिए कोई अन्तर नहीं था। उन्हें तो किंग्सफोर्ड को पाठ पढ़ाना था। उन दिनों तक भारतीय युवक बम बनाने और उनका प्रयोग करने में निपुण हो गए थे। कुछ युवकों ने किंग्सफोर्ड के नाम पर एक पुस्तक का बंडल बनाकर पार्सल के रूपमें मुजफ्फरपुर भेजा। उन पुस्तकों में एक ऐसा बम रखा गया था, जो यदि किंग्सफोर्ड पार्सल खोलता तो, पार्सल खोलते ही बम फट पड़ता और खोलने वाले के लोथड़े उड़ जाते। न जाने क्या संयोग था कि किंग्सफोर्ड को जब वह पार्सल मिला तो उसने उसको कभी खोल ही नहीं। पार्सल का भेजना व्यर्थ गया।

उन दिनों 'अनुशीलन समिति' के नाम से युवकों की एक संस्था बंगाल में कार्य कर रही थी, उसी ने यह सब योजना बनाई थी। खुदीराम बोस भी कॉलेज में प्रविष्ट होने के बाद इस 'अनुशीलन समिति' के सदस्य बनकर उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। समिति ने खुदीराम बोस के साथ-साथ समिति के ही दूसरे सक्रिय सदस्य प्रफुल्लचन्द्र चाकी को किंग्सफोर्ड-मारण-मिशन पर नियुक्त कर दिया। शास्त्रास्त्रों से सज्जित कर उन दोनों को मुजफ्फरपुर भेज दिया गया। वहाँ पहुँचकर स्टेशन के पास ही किसी धर्मशाला में उन्होंने अपने निवास की व्यवस्था की। किंग्सफोर्ड की दैनंदिन गतिविधियों पर गिद्धदृष्टि रखने में उनको 10-12 दिन लग गए। उन्हें विदित हुआ कि सायंकाल के समय वह क्लब के लिए जाया करता है। वहाँ पर नगर के सभी अंग्रेज अधिकारी आकर मिलते थे। उन्होंने किंग्सफोर्ड की फिटन गाड़ी का रंग भी ध्यान में रख लिया।

यह संयोग ही था कि उसी रंग की फिटन गाड़ी मुजफ्फरपुर के एक प्रसिद्ध वकील पी. केनेडी की भी

थी। किन्तु इसका ज्ञान उन युवकों को नहीं था। 30 अप्रैल, 1908 की संध्या के समय वे दोनों युवक क्लब के फाटक के निकट झाड़ियों में छिपकर किंग्सफोर्ड के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगे। ज्यों ही उस रंग की फिटन बाहर निकली युवकों ने अपना निशाना साध दिया। उस फिटन में किंग्सफोर्ड नहीं अपितु पी. केनेडी की पत्नी और पुत्री क्लब से घर जा रही थीं। पुत्री की तो उसी समय मृत्यु हो गई। श्रीमती केनेडी दो दिन बाद परलोक सिधारी।

किंग्सफोर्ड की सुरक्षा में नियुक्त सिपाही फैजुद्दीन और तहसीलदार खाँ ने शाम के समय उन युवकों को क्लब के आस-पास जब घूमते हुए देखा था तो उनसे वहाँ से जाने के लिए कहा था। बम के धमाके का स्वर सुनकर तहसीलदार खाँ आगे बढ़ा। उसने उन दोनों को भागते हुए भी देख लिया, किन्तु तब तक वह उनकी पकड़ से दूर निकल गए थे। चारों ओर इस बम-विस्फोट की चर्चा होने लगी। क्रांतिकारियों द्वारा बम-विस्फोट से प्राणहरण की यह प्रथम घटना थी, सर्वत्र इसकी चर्चा होने लगी और उन सिपाहियों द्वारा बताए गए हुलिए के अनुसार सभी पुलिस चौकियों को उनका विवरण भेजकर उनकी तलाशी का आदेश प्रसारित कर दिया गया। खुदीराम वहाँ से भाग गये और रातभर इतने भागे कि वहाँ से 25 मील दूर बैनी नामक स्थान पर पहुँच गये। प्रातःकाल हो गया था। भूख से उनका हाल बेहाल था। रातभर वह भागते रहे थे, इस कारण बहुत थक भी गये थे। एक बनिये की दुकान पर लाई-चने की तलाश के लिए गये। वहाँ उन्होंने रात को मुजफ्फरपुर में हुई बम-विस्फोट की घटना की चर्चा सुनी।

चर्चा करते हुए लोगों के मुख से उन्होंने सुना कि बम-विस्फोट में दो अंग्रेज मेमों की मृत्यु हो गई है। मरने वालों में किंग्सफोर्ड का नाम न सुनकर खुदीराम के क्रोध का पारावार नहीं रहा। वह तो अब तक यही समझ रहे थे कि उनका उद्देश्य पूरा हो गया है। किन्तु दूसरी ही बात सुनकर उनके मुख से सहसा एक चीख निकल गई। रातभर के भूखे-प्यासे, थके हुए बोस के मुख से अपने उद्देश्य में असफल होने की बात सुनकर यह चीख निकल गई। उनकी चीख सुनकर लोगों का ध्यान उनकी ओर गया और उनका बिगड़ा हुआ हुलिया उन्हें कुछ वैसा ही लगा जैसा वे लोग बम फेंकने वाले का सुन रहे थे। कुछ लोग उन्हें पकड़ने के लिए दौड़े तो उन्होंने वहाँ से भी भाग जाना उचित समझ दौड़ लगा दी। किन्तु बहुत थके और भूखे होने के कारण वह अधिक भागने में असमर्थ हो गए तो सिपाहियों के हाथ पड़ गये। उनके पास भरी हुई पिस्तौल थी, उसका भी वह उस समय उपयोग करने में असमर्थ रहे। खुदीराम को वहाँ से पकड़कर मुजफ्फरपुर लाया गया और जब मजिस्ट्रेट के सम्मुख उन्हें उपस्थित किया गया तो उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने ही मुजफ्फरपुर में बम का धमाका किया था।

प्रफुल्लचन्द्र चाकी भी भागे थे। उनकी दिशा दूसरी थी। वह भागते हुए समस्तीपुर जा पहुँचे। समस्तीपुर से उन्होंने कलकत्ता की गाड़ी पकड़ी। गाड़ी के जिस डिब्बे में चाकी बैठे थे उसी डिब्बे में कलकत्ता का एक पुलिस अधिकारी नन्दलाल बनर्जी भी बैठा था। बम विस्फोट के दिन वह मुजफ्फरपुर में ही था। प्रफुल्ल को देखकर उसे कुछ संदेह हुआ। उसने किसी स्टेशन पर उतरकर मुजफ्फरपुर तार देकर चाकी का हुलिया मँगवाया और हुलिया मिलने पर कुछ स्टेशन और आगे निकलने पर चाकी को पकड़ने का उपक्रम करने लगा कि चाकी उसके इरादे को भाँप गये थे। उन्होंने जेब से पिस्तौल निकालकर नन्दलाल पर तान दिया। किन्तु निशाना चूक गया। पिस्तौल में एक गोली और थी। इसके पहले चाकी को कोई जीवित पकड़े उन्होंने पिस्तौल अपनी छाती पर तानकर अपने जीवित शरीर को नन्दलाल को स्पर्श नहीं होने दिया। चाकी की मृतदेह को लिये नन्दलाल कलकत्ता पहुँचा। क्रांतिकारियों को जब इसका समाचार मिला तो उन्होंने अपनी योजना बनाई और एक दिन मध्याह्न के आतप में नन्दलाल की गोली लगने से मृत्यु का समाचार सारे कलकत्तावासियों के कानों को झंकृत कर गया। चाकी का बदला ले लिया गया।

लॉर्ड डफ नामक एक अंग्रेज की अदालत में खुदीराम पर अभियोग चलने लगा। सरकार की ओर से मानिक और मजूमदार नाम के दो वकील नियुक्त थे। किन्तु खुदीराम की ओर से वकालत करने के लिए तो साहस चाहिए था। अन्त में कालीदास बोस नामक एक वकील उनकी वकालत करने के लिए उद्यत हो ही गए। न्याय का नाटक खेला गया। खुदीराम ने तो पहले ही अपराध को स्वीकार कर लिया था। समय पर उन्हें प्राणदण्ड देने का निर्णय कर दिया गया। इस निर्णय के विरुद्ध अपील भी की गई, किंतु अपील सुनने वाले भी तो वैसे ही थे, निर्णय बरकरार रहा।

अदालत में 11 अगस्त, 1908 को फाँसी देने का निश्चय किया गया। जिस प्रकार दामोदार चाफेसर ने हाथ में गीता लेकर फाँसी का फंदा चूमा था, उससे प्रेरणा पाकर खुदीराम ने उसी का अनुकरण किया और गीता हाथ में लेकर 17 वर्ष के उस उभरते हुएयुवक ने हँसते-हँसते माँ के लिए बलिवेदी पर अपनी आहुति अर्पित कर दी।

॥ ओ३म् ॥

आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M : 9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति,
आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक टिकिट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित : .....
.....
.....
.....